सच्चे लोगों को कभी प्रशंसा की जरूरत नहीं होती।

– अज्ञात

नेतृत्व को लेकर उत्साह

'मोदी है तो मुमकिन है' नारे के जिस असर को चुनावी माना जा रहा था, वह अब चुनावों के बाद भी कुछ देर तक बना रहेगा, यह तय हो गया है। दुनिया में ट्रेड वॉर के हालात अलग चिंता का विषय हैं।

मोहन भट्ट

जिस विशाल बहुमत से नरेंद्र मोदी सत्ता में वापस लौटे हैं, वह अपने आप में इस बात का सबूत है कि आम लोगों में उनके नेतृत्व को लेकर खासा उत्साह है। फिर भी अगर कोई कसर रह गई थी तो मोदी मंत्रिमंडल ने अपनी पहली ही बैठक में कई सकारात्मक फैसले करके उसे पूरा कर दिया। किसान सम्मान निधि योजना से लेकर पेंशन योजना और प्रधानमंत्री छात्रवृत्ति योजना तक में मिलने वाली रकम और इसके दायरे को बढ़ाकर सरकार ने राजकोष पर थोड़ा अतिरिक्त बोझ जरूर डाला है, लेकिन इनके जरिए वह देश में सकारात्मक माहौल बनाने में भी कामयाब रही है।

'मोदी है तो मुमकिन है' नारे के जिस असर को चुनावी माना जा रहा था, वह अब चुनावों के बाद भी कुछ देर तक बना रहेगा, यह तय हो गया है। कई वजहों से राजनीतिक गलियारों में ऐसी चर्चा शुरू हो गई थी कि नतीजे चाहे जो भी आएं, चुनाव के बाद आम लोगों के लिए कठिन दौर शुरू हो जाएगा। ईरान से तेल खरीदने पर रोक के अमेरिकी आग्रह को ध्यान में रखते हुए यह माना जा रहा था कि इस दौर की शुरुआत पेट्रोल–डीजल की कीमतों में तेज बढ़ोतरी से होगी। मगर इस मोर्चे पर अभी तक कोई बड़ी हेर–फेर नहीं दिखी है। खबर यह भी आई कि भारत सरकार इस मसले पर अमेरिकी आग्रह यूं ही स्वीकार करने के मूड में नहीं है।

इससे आम लोगों में थोड़ी राहत दिखी, लेकिन रोजगार और जीडीपी के आंकड़ों ने स्थितियों की गंभीरता उजागर कर दी। बेरोजगारी दर 45 साल के सबसे ऊंचे स्तर पर और विकास दर पांच साल के सबसे निचले स्तर पर पहुंच जाने की आधिकारिक पुष्टि हो जाने के बाद चिंता के आवेग को थामने का कोई मजबूत आधार नहीं रह गया था। मंत्रिमंडल की पहली बैठक में लिए गए ये फैसले इस आवेग को रोक भले न पाएं, पर इसका असर कम जरूर कर रहे हैं। इससे यह तो होगा कि देश के मीडिया स्पेस में नकारात्मक खबरों का बोलबाला नहीं देखने को मिलेगा, लेकिन समस्याओं को देखते हुए यह काफी नहीं है। रोजगार और जीडीपी ग्रोथ, इन दोनों ही मोर्चों पर जल्दी कुछ करना होगा। दुनिया में ट्रेड वॉर के हालात अलग चिंता का विषय हैं।

ईरान से तेल खरीद पर रोक को लेकर अमेरिका को मनाने की चुनौती तो है ही, डॉनल्ड ट्रंप भारत को व्यापार में तरजीही दर्जा खत्म करने का बाकायदा ऐलान कर चुके हैं, जो इसी हफ्ते पांच तारीख से लागू हो जाएगा। जाहिर है, लोगों की उम्मीद बनाए रखने का काम सरकार के लिए खासा मुश्किल है। आर्थिक सुधार के लंबित अजेंडा पर अमल से शायद कुछ बात बने। उम्मीद करें कि नई पारी में मोदी सरकार अपनी प्राथमिकताएं पहले से ज्यादा स्पष्ट रखेगी।

विचारों की शुद्धि

धर्म-दर्शन

मधुरिता।

ज्ञान योग, भक्ति योग, कर्म योग , राजयोग आदि परन्तु इनको समझने के लिए जिस चीज कि आवश्कता होती है वही है विचार योग ! विचार ही कर्मों का जड़ है , जैसे विचार अच्छे या बुरे होंगे कर्मों का फल उसी अनुरूप होंगे। यह सारा संसार विचार के ही अधीन है। विचार ही सबका शासक है , परन्तु इस विचार पर बहुत कम ध्यान दिया गया है। विचार – योग तलवार के धार पर चलने वाले व्यक्ति कि तरह सावधान होकर किया जा सकता है। इस पृथ्वी के प्रत्येक प्राणी तथा वस्तु का अपना एक विशिष्ट स्वाभाव है द्य हवा का गुण है चलना, आग का गुण है जलना और जल का धर्म है बहना। ठीक इसी प्रकार मन का भी स्वाभाव है हर पल चलते रहना द्य आजकल विचारों की शुद्धिकरण पर ध्यान नहीं देते जिसके परिणामस्वरूप कर्म फल भयानक होता है।

संपादकीय

सिस्टम की पोल खोल

दिल्ली में रविवार को तड़के अनाज मंडी इलाके की एक फैक्ट्री में लगी आग में 43 लोगों की मौत ने एक बार फिर हमारे सिस्टम की पोल खोल दी है। आग लगने की कई घटनाएं राजधानी में पहले भी घट चुकी हैं। 17 लोगों की जान लेने वाली एक होटल में लगी आग इसी साल फरवरी की घटना है। उपहार सिनेमा जैसी त्रासदी आज भी पूरे देश को याद है लेकिन लगता नहीं कि राजधानी प्रशासन ऐसी घटनाओं से कोई सबक लेता है।

हर हादसे के बाद तमाम गड़बड़ियां ठीक करने के संकल्प दोहराए जाते हैं। जांच चलती है। कुछ दोषी पकड़े जाते हैं लेकिन फिर सब कुछ भुला दिया जाता है। आज भी दिल्ली के कई रिहायशी इलाकों में फैक्ट्रियां लगाई जा रही हैं और जरूरी सुरक्षा इंतजामों को ताक पर रखा जा रहा है। अनाज मंडी के मामले में हालात ऐसे ही थे। बताया जा रहा है कि इन कारखानों को खाली करने के लिए एक महीने पहले नोटिस भेजा गया था लेकिन नोटिस की अनदेखी की गई।

फैक्ट्री चलाने वालों के पास ना तो फायर की एनओसी थी, ना ही उन्होंने यहां फायर सेफ्टी का कोई इंतजाम किया हुआ था। हद तो यह कि सात महीने पहले ही इस इमारत में आग लगी थी फिर भी कोई इंतजाम नहीं किया गया। नियमों के हिसाब से घरेलू इंडस्ट्री में ज्यादा से ज्यादा 9 लोगों को रखा जा सकता है और बिजली का लोड 11 किलोवॉट से ज्यादा नहीं हो सकता लेकिन यहां सैकड़ों कर्मचारी काम कर रहे थे। इमारत में वेंटिलेशन का भी पर्याप्त इंतजाम नहीं था।

सचाई यह है कि राजधानी में ऐसी हजारों इमारतों में गुपचुप कारखाने चलाए जा रहे हैं, जहां मामूली चूक से बड़ा हादसा हो सकता है।

नवाचार के माध्यम से हमें उसी जीवन दर्शन को न केवल भारत बल्कि पूरे विश्व में प्रचारित-प्रसारित करना है। हर क्षेत्र में इनोवेशन की आवश्यकता है। भारत समेत पूरा विश्व आज मूल्यों के संकट का सामना कर रहा है।

बदलेगी शिक्षा की तस्वीर

रमेश पोखरियाल निशंक

सामाजिक–आर्थिक विकास की नई जमीन तैयार कर रही भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए आज बड़े पैमाने पर कुशल और सक्षम पेशेवरों की आवश्यकता है। वैश्विक प्रतिस्पर्धा में बेहतरीन प्रदर्शन के लिए यह जरूरी शर्त है। यह आवश्यकता तभी पूरी होगी जब हम एक श्रेष्ठ शिक्षा प्रणाली कायम करें। शिक्षा में यह क्षमता है कि वह किसी राष्ट्र को वैश्विक महाशक्ति के रूप में स्थापित कर सकती है। जॉन डी रॉकफेलर ने कहा था कि अच्छा प्रबंधन औसत लोगों को यह दिखाता है कि श्रेष्ठ लोगों की तरह काम कैसे किया जाता है। शिक्षा जगत में इधर सकारात्मक बात यह हुई है कि हम न केवल नवाचार (इनोवेशन) के महत्व को समझने लगे है बल्कि दैनिक व्यवहार में इसे लाने का गंभीर प्रयास भी करने लगे हैं।

हम अब परिणाम आधारित कार्यशैली अपना रहे हैं, हालांकि इस क्षेत्र में काफी कुछ किए जाने की आवश्यकता है। इसीलिए नई शिक्षा नीति के तहत स्कूली व उच्च शिक्षा में शोध, नवाचार और सृजनात्मक वातावरण को बढ़ावा देने के गंभीर प्रयास किए गए हैं। नई शिक्षा नीति भारत केंद्रित है जिसमें हमारी गौरवमयी

संस्कृति और मानवीय मूल्यों के संरक्षण–संवर्धन पर काफी जोर है। हमारी संस्कृति अध्यात्म की एक निरंतर बहती धारा है जिसे ऋषियों–मुनियों, संतों और सूफियों ने अपने पवित्र जीवन दर्शन से लगातार सींचा है। नवाचार के माध्यम से हमें उसी जीवन दर्शन को न केवल भारत बल्कि पूरे विश्व में प्रचारित–प्रसारित करना है। हर क्षेत्र में इनोवेशन की आवश्यकता है। भारत समेत पूरा विश्व आज मूल्यों के संकट का सामना कर रहा है। ब्रिटिश काल के दौरान मूल्यों की जो गिरावट शुरू हुई वह आज भी जारी है। उस समय भारत के बचाव में आए महात्मा गांधी, राजेंद्र प्रसाद, सुभाष चंद्र बोस और सरदार पटेल सत्य, अहिंसा, त्याग, विनम्रता, समानता जैसे मूल्य लेकर आए। आजादी के 70 वर्ष बाद प्रभावी प्रबंधन और बेहतर विकास के लिए उन्हीं मूल्यों पर वापस जाने की आवश्यकता है।

नई शिक्षा नीति में उन्हीं मूल्यों को जीवन में फिर से अहम जगह देने की कोशिश की गई है। नव प्रवर्तन से हम शिक्षा में इन श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों का समावेश कर श्रेष्ठ नागरिकों का निर्माण कर सकते हैं। नवाचार युक्त शिक्षा का उद्देश्य सामाजिक–आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन स्थापित करना है। नई शिक्षा नीति के माध्यम से हम विद्यार्थियों को यह सिखाने में कामयाब होंगे कि एक जीवंत समाज के लिए हमारे स्वास्थ्य, हमारे कार्यों और प्रकृति के बीच सामंजस्य आवश्यक है। शैक्षिक बदलाव में सबसे बड़ी जिम्मेदारी हमारे एक करोड़ से अधिक शिक्षकों पर है। हरेक शिक्षक में नवाचार की संभावनाएं मौजूद होती हैं, लेकिन औसत शिक्षक यह मानकर चलता है कि उसका काम पाठ्यक्रम पढ़ा देना और बच्चों को परीक्षा के लिए तैयार करना भर है, जबकि उसका असल काम बच्चे की उत्सुकता का विकास करना है।

अष्टयोग-4893

	1	3			2	4
	34	6	33	1	33	7
7	5			6		
	29	2	31		31	5
	4		5	3		1
3	30		37		33	
	1	5			7	

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 4892 का हल

3	5	4	6	7	1	2
2	33	1	34	6	30	5
5	6	7	1	2	3	4
4	30	2	25	1	34	6
1	2	3	4	5	6	7
6	36	6	34	4	31	3
7	6	5	4	3	2	1

■ Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

उम्मीद जगा रही हैं उम्र को थामने की कोशिशें

मुकुल व्यास। बुढ़ापे की प्रक्रिया पर अंकुश लगाने के लिए दुनिया में पिछले काफी समय से रिसर्च चल रही है। हालांकि आयु–वृद्धि एक स्वाभाविक प्रक्रिया है और इसे पूरी तरह से पलट देना या रोक पाना असंभव है, फिर भी आयु–वृद्धि का विज्ञान एक दिलचस्प क्षेत्र है। दुनिया में आज बुढ़ापा–रोधी दवाओं का विज्ञान तेजी से उभर रहा है। इस फील्ड को सेनोलाइटिक्स कहा जाता है। कुछ वैज्ञानिकों द्वारा जानवरों पर किए गए प्रयोगों के उत्साहवर्धक परिणाम सामने आने के बाद अब मनुष्यों पर भी क्लिनिकल ट्रायल शुरू हो गए हैं। यदि ये अध्ययन सफल रहे तो उम्मीद की जा सकती है कि जो लोग इस समय प्रौढ़ावस्था में हैं वे अपनी वृद्धावस्था जवानों की तरह बिताएंगे। सेनोलाइटिक्स में शरीर की 'सेनेसेंट' कोशिकाओं को निशाना बनाया जाता है। ये शरीर की दोषपूर्ण कोशिकाएं होती हैं। जैसे– जैसे हमारी उम्र बढ़ती है, शरीर के अंदर इन कोशिकाओं का विस्तार होता जाता है। इनसे निकलने वाले पदार्थ सूजन पैदा करते हैं और दूसरी कोशिकाओं को भी सेनेसेंट बनाने लगते हैं। इससे पूरे शरीर के अंदर टिशू क्षतिग्रस्त होने लगते हैं।